बचपन

संगीता श्रीवास्तव*

बचपन खुशियों का गुलदस्ता,
सबसे महँगा लेकिन सस्ता।
सारी खुशियाँ हँसी-ठिठोली,
मेरी गुल्लक और मेरा बस्ता॥

चाँद-सितारे हाथ हमारे,
छूने को इतराते हैं।
रिमझिम-रिमझिम बरसे बदरा,
हम उम्मीद की नाव चलाते हैं॥

टूटी पेंसिल घिस-घिस कर भी,
हम अपना चित्र सजाते हैं।
ठंड हमें क्या रोकेगी,
प्रचंड धूप को दोस्त बनाते हैं॥

सुबह नहीं डराती हमको,
लोरी नींद सुनाती है।
'कल क्या होगा देखा जाएगा',
कहकर ज़िंदगी मुस्काती है॥

बचपन दौर सुहाना है,
मासूम और मनभावन है।
बचपन से प्यार बढ़ाना है,
गीत खुशियों के गाना है॥

**स्वतंत्र लेखिका/कवयित्री*, ज्ञानखंड 2, इंदिरापुरम, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश 201 014